7 पिता का पत्र पुत्र के नाम

प्रिटोरिया जेल,
25 मार्च, 1909

प्रिय पुत्र,

प्रतिमास एक पत्र लिखने और एक पत्र प्राप्त करने का अधिकार मुझे मिला है। अब मैं पत्र लिखूँ किसे? मिस्टर रीच का, मिस्टर पोलक का और तुम्हारा ख्याल मुझे बारी-बारी से आया। लेकिन मैंने तुम्हें ही लिखना पसंद किया क्योंकि पढ़ने के समय तुम्हारा ही ध्यान मुझे बराबर रहता था।

मेरे बारे में तुम जरा भी चिन्ता मत करना। विशेष कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं है। मैं पूर्णरूप से शांति में हूँ।

आशा है कि 'बा' अच्छी हो गई होगी। मुझे मालूम है कि तुम्हारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं, लेकिन वे मुझे नहीं दिए गए। फिर भी डिप्टी गवर्नर की उदारता से मुझे मालूम हुआ कि 'बा' का स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्या वे फिर से चलने-फिरने लगीं? 'बा' और तुमलोग सबेरे दूध के साथ साबूदाना बराबर ले रहे होगे।

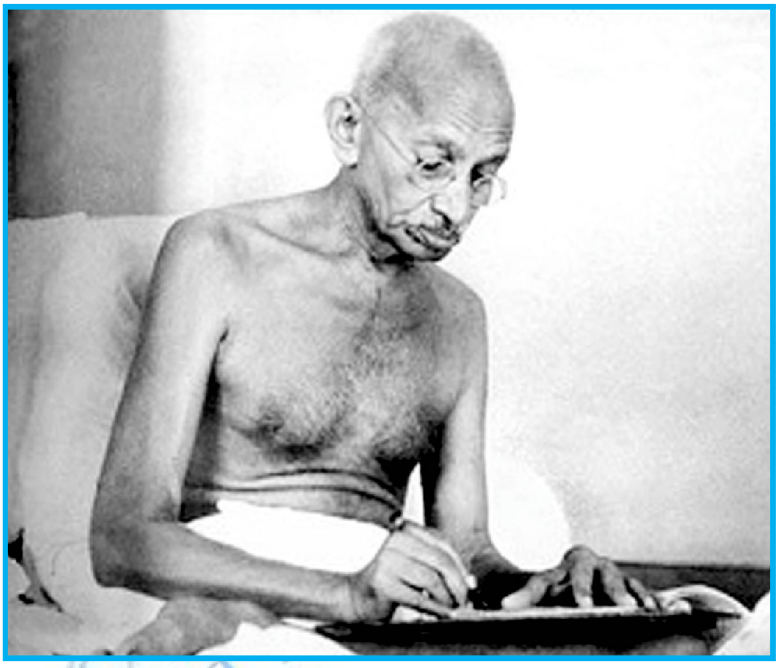

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

और अब कुछ तुम्हारे विषय में कहना चाहूँगा । तुम कैसे हो? तुम पर जो जिम्मेवारी मैंने डाली है, तुम उसके सर्वथा योग्य हो और आनंद से उसे निभा रहे होगे, मुझे ऐसी आशा है।

मैं यह जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। जेल में मैंने यहाँ खूब पढ़ा है। इससे मैं यह समझता हूँ कि केवल अक्षर-ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र-निर्माण और कर्त्तव्य का बोध है।

यदि यह दृष्टिकोण सही है और मेरे विचार से तो यह बिल्कुल ठीक है, तो तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे होगे। आजकल तुम्हें अपनी बीमार माँ की सेवा का अवसर मिला है। रामदास और देवदास को भी तुम सँभाल रहे हो। यदि यह काम तुम अच्छी तरह से और आनंद से करते हो तो तुम्हारी आधी शिक्षा तो इसी के द्वारा पूरी हो जाती है।

उपनिषदों की एक टीका में लिखा है कि प्रथम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम संन्यास आश्रम के समान है। इसका मुझपर गहरा प्रभाव पड़ा है। आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते हैं। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को जिम्मेवारी और कर्त्तव्य का भान होना चाहिए। उन्हें अपने आचार और विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए। और यह वे भार समझकर नहीं करें, बल्कि एक आनंद का अनुभव करते हुए करें। यह आनंद कृत्रिम भी नहीं होना चाहिए। यह सरल और स्वाभाविक होना चाहिए। मैं जब तुमसे काफी छोटा था तो मुझे स्वयं अपने पिताजी की सेवा करने में बहुत आनंद मिलता था। बारह वर्ष की आयु के बाद, आमोद-प्रमोद का बहुत ही कम, बल्कि नहीं के समान ही अवसर मुझे मिला है।

संसार में तीन बातें बड़ी महत्वपूर्ण है। इसको प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे। ये तीन बातें हैं : अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। इसका मतलब यह नहीं कि तुझे अक्षर ज्ञान नहीं मिलेगा। वह तो मिलेगा ही। लेकिन तुम उसी की चिन्ता करो, यह मैं नहीं चाहता। इसके लिए तुम्हारे पास अभी बहुत समय है। अक्षर-ज्ञान तो इसलिए होता है कि जो कुछ तुम्हें मिला है, उसे तुम दूसरों को दे सको।

इतना और याद रखना कि अब से हमें गरीबी में रहना है। जितना अधिक मैं विचार करता

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEB COPY

हूँ, उतना ही अधिक मुझे लगता है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरों की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है।

खेत में घास निराने और गड्ढे खोदने में पूरा समय देना। भविष्य में हमें अपना जीवन-निर्वाह इसी से करना है। मेरी इच्छा है कि अपने परिवार में तुम एक योग्य किसान बनो। सभी औजारों को सदा साफ और सुव्यवस्थित रखना।

अक्षर-ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देना। भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। ये दोनों विषय बड़ी उम्र में सीखना कठिन है। संगीत में भी बराबर रुचि रखना।

हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी के चुने हुए भजनों एवं कविताओं का एक संग्रह तैयार करना चाहिए। वर्ष के अंत में तुम्हें अपना यह संग्रह बहुत मूल्यवान प्रतीत होगा। काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न यही सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ। शांतचित्त् से विचारपूर्वक तुमने यदि सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो वे तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। तुमसे मुझे यह भी आशा है कि घर के लिए जो भी तुम खर्च करते हो, उसका पैसे-पैसे का हिसाब रखते हो।

मुझे यह भी आशा है कि तुम रोज शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करते होगे और रविवार को श्री वेस्ट के यहाँ भी प्रार्थना में जाते होगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हें अपने जीवन में आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्र को पढ़कर अच्छी तरह समझ लेने के बाद मुझे जवाब देना। जवाब जितना लंबा चाहो उतना लिख सकते हो। अंत में, मैं अपने प्रेम सहित यह पत्र समाप्त करता हूँ ।

श्री मणिलाल गाँधी
इंडियन ओपिनियन,
फिनिक्स, नेटाल ।

तुम्हारा पिता
मोहनदास

-मोहनदास करमचंद गाँधी

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ :

आमोद-प्रमोद - सुख, चैन
भान - ज्ञान, बोध
कृत्रिम - बनावटी
निराने - निकौनी
सुव्यवस्थित - अच्छी व्यवस्था से युक्त
सद्‌गुण - अच्छा गुण
शांतचित्‌ - शांत हृदयवाला

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. गाँधीजी ने पत्र के माध्यम से अपने पुत्र को क्या-क्या शिक्षाएँ दी है?
2. गाँधीजी ने असली शिक्षा किसे माना है? उल्लेख कीजिए।
3. गाँधीजी के पत्र के माध्यम से किन तीन बातों को महत्वपूर्ण माना गया है?
4. ''बा'' उपनाम से किन्हें जाना जाता है?
5. **निम्नलिखित प्रश्नों के चार-चार विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प के सामने (√) सही का निशान लगाइए-**

(क) गाँधीजी ने अपने जिस पुत्र को पत्र लिखा उसका नाम था-

(i) देवदास गाँधी
(ii) मणिलाल गाँधी
(iii) मोहनदास
(iv) रामदास गाँधी

(ख) गाँधीजी ने यह पत्र कहाँ से लिखा था?

(i) पटना जेल से
(ii) लखनऊ जेल से
(iii) तिहाड़ जेल से
(iv) प्रिटोरिया जेल से

(ग) गाँधीजी ने यह पत्र कब लिखा?

(i) 25 मार्च, 1919
(ii) 25 मार्च, 1900
(iii) 25 मार्च, 1909
(iv) 25 मार्च, 1929

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से आगे-

1. आप अपने पिताजी को गाँव/शहर की जीवन शैली के सम्बन्ध में एक पत्र लिखिए।
2. आप अपने गाँव के किसान के बारे में लिखिए ।
3. क्या हमें पत्र लिखना चाहिए ? हाँ तो क्यों? नहीं तो क्यों?

व्याकरण-

1. **निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।**

   पत्र, शिक्षा, आश्रम, जिम्मेवारी, महत्वपूर्ण, गरीबी, आनन्द, जेल, चेष्टा, सुख ।

2. **निम्नांकित शब्दों में पाठ में शाला, गाड़ी में वान, दुकान में दार जोड़े गए हैं, शब्दों के अंत में जुड़नेवाले ऐसे शब्द प्रत्यय कहलाते हैं।**

   पाठशाला – पाठ + शाला

   गाड़ीवान – गाड़ी + वान

   दुकानदार – दुकान + दार

3. **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय को चुनकर लिखिए।**

   उदारता, नियमपूर्वक, मूल्यवान, स्वाभाविक, लड़कपन

4. **नीचे कुछ भाववाचक संज्ञाएँ दी गयीं हैं । इससे विशेषण बनाकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

   महत्व, निश्चय, उपयोग, सहानुभूति, मानव।

कुछ करने को-

1. गाँधीजी के जीवन से संबंधित कुछ मुख्य बातों को अपनी कक्षा में सुनाइए ।
2. अन्य पत्र जो महापुरुषों द्वारा लिखे गए हैं, संकलन कीजिए तथा उसे अपनी कक्षा में प्रदर्शित कर शिक्षकों और मित्रों से चर्चा कीजिए ।
3. नेटाल कहाँ है? इसकी जानकारी हासिल कीजिए।

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

Abdiel Solutions Empowering Technologies